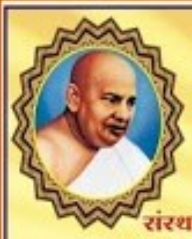

श्री राजेन्द्र-धनचन्द्र-भूपेन्द्र-यतीन्द्र-विद्याचन्द्र-जयन्तसेन-शान्ति
गुरुवरों के विचारों/कार्यों को समर्पित

यतीन्द्र वाणी

संस्थापक- प. पू. तपस्वी योगिराज, संयमवयः स्थविर श्री शान्तिविजयजी म. सा.

हिन्दी पाक्षिक

प्रेरक- भाण्डवपुर तीर्थप्रेरक, प्रवचनकार प. पू. आचार्यप्रवर श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा.

सम्पादक- पंकज बी. बालड़ | स. सम्पादक- कुलदीप डाँगी 'प्रियदर्शी'

* वर्ष : 24 * अंक : 19 * मोटेरा, अहमदाबाद * दिनांक 1 जनवरी 2019 * पृष्ठ : 4 * मूल्य 5/- रुपये

पुण्य-सम्राट गुरुदेवश्री के पट्टधर एवं
कृपासिन्धु, योगिराज गुरुदेवश्री के शिष्यरत्न
शासन-प्रभावक, आचार्यदेवेश

श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा.

45 वें दीक्षा दिवस

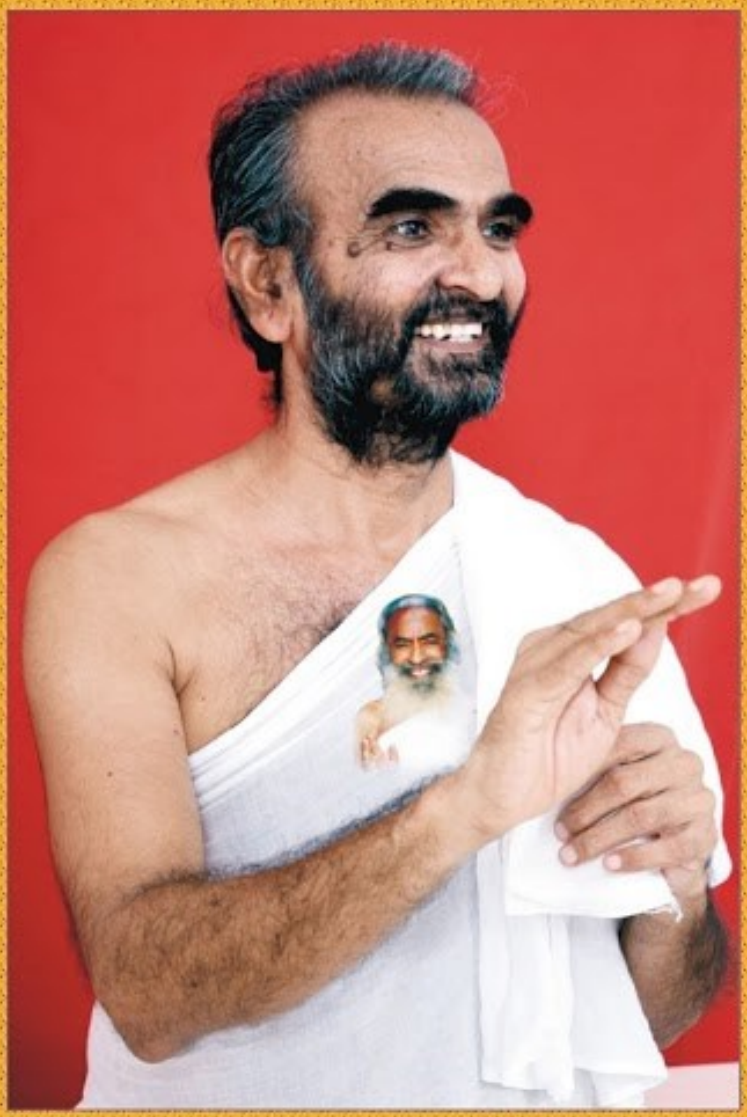

पर चरणों में वन्दन ! भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक का करते अभिनन्दन !!

पुण्य-सम्राट के पट्टधर,
शान्ति गुरु मन भाए ।
जयरत्नसूरि का मिलकर,
हम दीक्षा दिवस मनाएँ ।।

वन्दनकर्ता

श्री महावीर जैन श्वेताम्बर पेढ़ी (ट्रस्ट), भाण्डवपुर तीर्थ
श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भाग्योदय ट्रस्ट (संघ), भाण्डवपुर तीर्थ

दूरभाष - 02977-270033, 7340019703-4-5

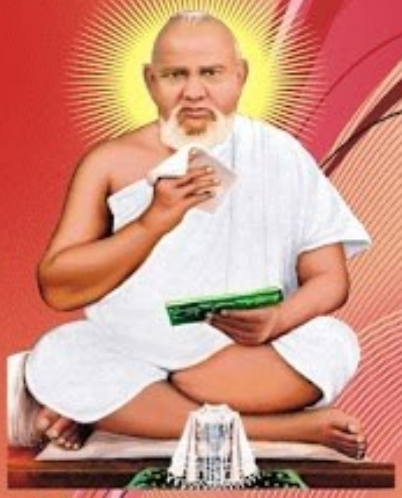

पीताम्बर विजेता, व्याख्यान-वाचस्पति, आचार्यदेव
श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. सा.

अध्यात्म योगी, आचार्यदेव
श्रीमद्विजय शान्तिसूरीश्वरजी म. सा.

आशीर्वाद अमीवर्षा प्रदाता गुरुदेव

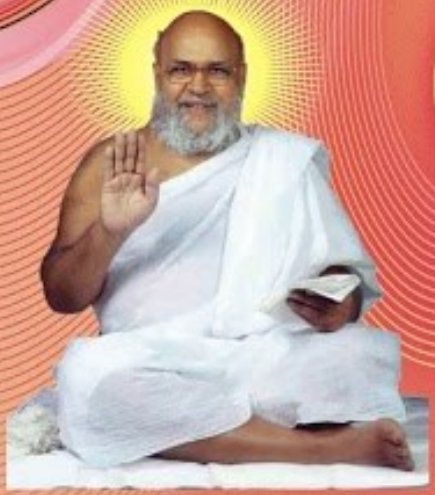

पुण्य-सम्राट, राष्ट्रसन्त आचार्यदेव
श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा.

संयमवयः स्थविर, योगिराज, कृपासिन्धु गुरुदेव
श्री शान्तिविजयजी म. सा.

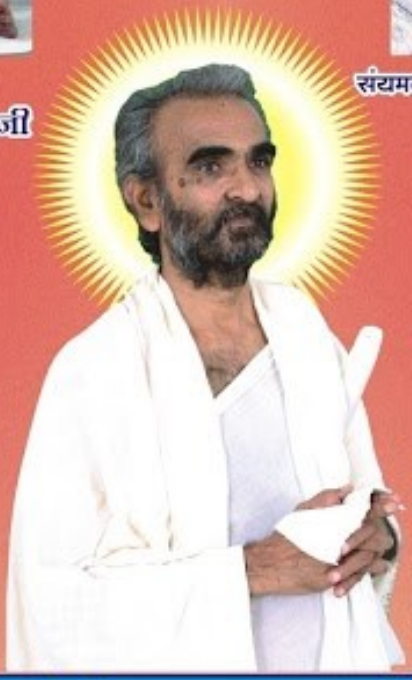

वन्दनकर्ता
श्री शान्तिदूत जैनोदय ट्रस्ट, मोटेरा-आबू देलवाड़ा
दूरभाष - 079-23296124 (मोटेरा), 02974-238980, 9001295005 (आबूपर्वत)

माण्डवपुर तीर्थोद्धारक, सूरिमन्त्राराधक, प्रवचनकार, जिनशासन प्रभावक, आचार्यदेवेश

श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा.

बचपन से सत्तावन : प्रभावना की मनभावन

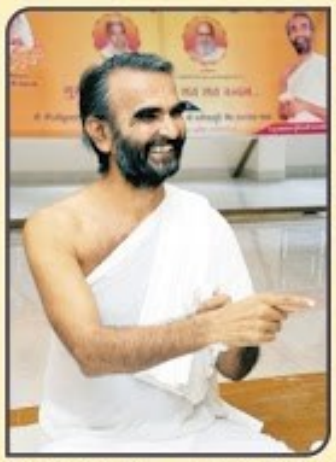

व्यक्ति नाम से नहीं अपने कार्यों से जगत में प्रसिद्ध एवं सिद्ध होता है और वन्दनीय एवं अभिनन्दनीय होता है। भारतवर्ष की पुण्यशाली धरा पर ऋषि, मुनि, पीर-पैगम्बर, सन्त, महात्माओं ने अपने ज्ञान-ध्यान और साधना-आराधना से प्राप्त शक्तियों और सिद्धियों का सदुपयोग कर जनकल्याण के अनुपम और अद्वितीय कार्य करते हुए इस देश का नाम विश्व के मानचित्र पर रेखांकित किया है। अनेक देशों के शिक्षाविद्, वैज्ञानिक उनके द्वारा प्रणीत ज्ञान का अध्ययन कर नित नवीन आविष्कार कर जनोपयोग में सहायक बन रहे हैं।

त्याग-तप, शौर्य और भक्ति की पावन वसुन्धरा राजस्थान में अनेक सन्तों ने विभिन्न सम्प्रदायों में अवतरण लेकर समाज एवं देश को अपने अध्यात्म बल से ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग की अविरल गंगा बहाते हुए समाज और देश-विदेश के जनमानस को नई रोशनी एवं नई दिशा प्रदान की है। जैन सन्तों का इस क्षेत्र में विशिष्ट स्थान है जिन्होंने घोर तप-त्याग करते हुए अपने आत्मचिन्तन की ज्ञान रश्मियों से जैन समाज ही नहीं अपितु इतर समाजों को भी आलोकित किया है। क्रिस्तुतिक परम्परा के दादागुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. ने नई क्रान्ति का शंखनाद करते हुए जिनशासन की सर्वोत्कृष्ट प्रभावना की वह इतिहास के स्वर्ण पृष्ठों पर सुनहरी लेखनी से आज भी अंकित है। आप द्वारा प्रणीत साहित्य का अध्ययन कर आज अनेक देश एवं विदेश के विद्वान ज्ञानार्जन कर अपनी ज्ञान पिपासा शान्त कर रहे हैं।

राजस्थान के जालोर जिले के एक छोटे ग्राम बागरा में विक्रम सम्वत् 2017, श्रावण शुक्ला 3 को रबारी (देवासी) कुल में श्री सुरतारामजी के गृह मन्दिर में मातुश्री जस्सीबाई की कुक्षी से कुलदीपक का अवतरण हुआ। परिवारजनों ने इस कुलदीपक का नामकरण 'राणा देवासी' किया। आपकी गौत्र मकवाणा रबारी थी।

'पूत के पग पालने में ही दिखते हैं' इस उक्ति को चरितार्थ किया राणा देवासी ने। बाल्यकाल से ही प्रतिभावान होनहार विद्यार्थी के रूप में योग्य शिक्षा अर्जित की। बाल्यावस्था में ही योगिराज श्री शान्तिविजयजी म. सा. ने एक नजर देख अपने तपोबल से जान लिया कि यह बालक भविष्य में जिनशासन का सजग प्रहरी बन कर धर्मध्वजा को चहुँदिशि में लहरायेगा और प्रसिद्धि और यश को अर्जित करते हुए गुरुकीर्ति में श्रीवृद्धि करेगा। जब राणा ने गुरुचरणों में समर्पित होकर योगिराज से भावपूर्वक संयम की भावना व्यक्त की तो योगिराजश्री ने राणा को मात्र 14 वर्ष की अल्पायु में विक्रम सम्वत् 2031, पौष शुक्ला 6 को बागरा में भागवती प्रव्रज्या प्रदान कर दी। आपकी दीक्षा श्री राजेन्द्रसूरि हाईस्कूल, बागरा के प्रांगण में हजारों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में विधिपूर्वक सम्पन्न हुई। योगिराजश्री ने अपने प्रथम शिष्य के रूप में आपका मुनि नाम श्री जयरत्नविजयजी म. जैसे ही उद्घोषित किया तो सारा पाण्डाल दादागुरुदेव एवं योगिराज के साथ नूतन मुनि के नाम की जयकारों से गूँज उठा।

सरल स्वभावी, शान्तमना, योगिराजश्री शान्तिविजयजी म. सा. के विनयी शिष्य बनकर अपनी संयम यात्रा गुरुवचन तहत्ति मानते हुए आपने गुरु प्रदत्त अनेक कार्य अपनी कुशलता एवं चातुर्य से सम्पादित किए। मुनिराजश्री जयरत्नविजयजी म. सा. की वृहद् दीक्षा अतिप्राचीन श्री माण्डवपुर तीर्थ में कविरत्न आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. के वरदहस्तों से योगिराज गुरुदेवश्री एवं अन्य मुनियों की निश्रा में सम्पन्न हुई। बालमुनि श्री जयरत्नविजयजी म. की सेवाओं से आचार्यदेवश्री विद्या बावजी बड़े प्रसन्न थे और आपको 'छोटक्या' के नाम से ही बुलाते और बतियाते थे। आपसे श्री विद्या बावजी को विशेष लगाव और स्नेह था। लघुमुनि होने से आप बड़ी जिम्मेदारी के साथ प्रत्येक कार्य को निष्ठा एवं लगन से करते थे और इसी विशिष्ट गुण की बदौलत आप सबके चहेते थे।

प. पू. कृपासिन्धु गुरुदेव योगिराजश्री ने धार्मिक, सामाजिक एवं जनकल्याण के सुसंस्कार प्रदान करते हुए गुरुगच्छ और जिनशासन की प्रभावना की सदा प्रेरणा प्रदान की जिसके परिणाम स्वरूप आपश्री ने अपने गुरुदेवश्री के सान्निध्य में अनेक स्थानों पर शासन प्रभावना के अद्वितीय कार्य सम्पादित किए। गुरुगच्छ की कीर्ति कैसे और किस प्रकार चहुँदिशि में विस्तारित हो इसका सदैव ध्यान रखा और इसके लिए समाज को सही दिशा निर्देश प्रदान करते हुए अपना उचित मंतव्य प्रस्तुत किया। गुरुकृपा का ही सुफल है कि समाज ने आपश्री के प्रत्येक आदेश का अक्षरसः पालन करते हुए निर्विरोध पालन किया जिसका सुपरिणाम वर्तमान में स्पष्ट रूप से झलकता है।

अपने गुरुदेवश्री द्वारा संस्थापित एवं आपश्री के द्वारा प्रेरित अनेक स्थानों पर तीर्थ स्थापना की जिनमें श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार-मोटेरा (अहमदाबाद), श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार-देलवाड़ा (आबू), श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार-श्री जीरावला तीर्थ, श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार धाम-झरड़ाजी-डोरडा, श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार-काया-उदयपुर पर तीर्थरूप जिनमन्दिर, गुरुमन्दिर की स्थापना करते हुए विकास किया। आपकी सद्प्रेरणा से श्री गौड़ी पार्श्वनाथ-राजेन्द्रसूरि मातुश्री धाम, आकोली में निर्मित हुआ। आप द्वारा प्रेरित अभिनव संस्थान श्री सुमतिनाथ-राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मन्दिर ट्रस्ट-रामेश्वरम् एवं सूरिराजेन्द्र-जयन्तसेन गुरुकुलम् संस्थान, बोरिआवी (आणन्द) है जो शीघ्र ही साकार तीर्थ का मूर्त्तरूप लेने हेतु निर्माणाधीन है।

वर्तमान में अतिप्राचीन तीर्थ श्री माण्डवपुर का विकास आपके दिशा निर्देशन में जिस द्रुतगति से चल रहा है वह आपकी दूरदर्शिता, दृढ़संकल्पशक्ति का परिचायक है। सम्पूर्ण देश ही नहीं अपितु विदेश के गुरुभक्तों ने इस तीर्थ को महातीर्थराज की उपाधि से अलंकृत करते हुए कहा है कि भविष्य में यह तीर्थ भूमि तीर्थों की अग्रिम पंक्ति में अपना स्थान बनाएगी और इस सबका श्रेय जाता है तो वह तपस्वीराज के शिष्यरत्न महामनस्वी, परम पूज्यश्री जयरत्नसूरिजी म. सा. को। जिन्होंने अथक परिश्रम करके पुण्य-सम्राट गुरुदेव एवं योगिराज गुरुदेवश्री के स्वप्न को साकार रूप देने का प्रण करते हुए बीड़ा उठाया। शासन एवं प्रशासन का भी इस तीर्थ के विकास में अपूर्व सहयोग रहा है। यहाँ शीघ्र ही शासकीय विद्यालय, शासकीय चिकित्सालय के साथ-साथ जैन विद्यालय का स्वप्न भी साकार होने की तैयारी है।

(शेष पृष्ठ तीन पर)

वन्दनकर्ता
श्री राजेन्द्र-शान्ति जैनोदय ट्रस्ट, जीरावला तीर्थ-डोरडा
दूरभाष - 9001295003 (जीरावला), 9001295002 (डोरडा)

बचपन से सत्तावन : प्रभावना की मनभावन... (शेष पृष्ठ दो का)

आपश्री द्वारा प्रेरित अनेक संस्थाएँ धार्मिक, सामाजिक एवं जनकल्याण के अनुपम कार्य वर्तमान में कर रही है, जिनमें- श्री महावीर जैन श्वेताम्बर पेढ़ी (ट्रस्ट), श्री वर्धमान-राजेन्द्र भाग्योदय ट्रस्ट (संघ)-श्री माण्डवपुर तीर्थ, श्री शान्तिदूत जैनोदय ट्रस्ट-अहमदाबाद, श्री गौड़ी पार्श्वनाथ-राजेन्द्रसूरि मातुश्री धाम चेरिटबल ट्रस्ट-आकोली, श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय राजेन्द्रसूरि स्मारक संघ उदयपुर, श्री राजेन्द्रसूरि सेवा संस्थान-उदयपुर एवं श्री यतीन्द्र वाणी प्रकाशन-मोटेरा (अहमदाबाद) प्रमुख हैं। आपकी प्रेरणा से श्री यतीन्द्र वाणी प्रकाशन द्वारा पिछले 24 वर्षों से नियमित हिन्दी पाक्षिक समाचार-पत्र 'यतीन्द्र वाणी' मोटेरा-अहमदाबाद से प्रकाशित किया जा रहा है। इन 24 वर्षों में कभी भी संयुक्तांक प्रकाशित नहीं हुआ यह पत्रिका के लिए गौरव का विषय है।

आपश्री एक कुशल एवं सिद्धहस्त प्रवचनकार भी है और अपनी प्रभावक प्रवचन शैली और स्पष्टवादिता के कारण शीघ्र ही आपने गुरुगच्छ में अपना विशिष्ट स्थान बनते हुए अपने प्रवचनों से सभी को सम्मोहित किया है। साहित्य प्रेमी होने के कारण आपने श्री माण्डवपुर दर्शन, श्री भीनमाल दर्शन, स्वाध्याय दर्शन (स्तोत्र संग्रह), श्री पंचप्रतिक्रमण सूत्र (सरल विधि सूत्र सहित), श्री राईय-देवसिय प्रतिक्रमण सूत्र (सरल विधि सूत्र सहित), श्री राई-देवसिय प्रतिक्रमण सूत्र (सचित्र सूत्र सहित), श्री स्थापनाचार्य, माण्डवपुर पंचांग व कैलेण्डर षष्ठम संस्करण आदि का प्रकाशन करवाया है।

आपने शासन प्रभावना के कार्य करते हुए उपधान तपाराधना, जिन प्रतिष्ठा, तीर्थ जीर्णोद्धार, गुरु स्मारकों की स्थापना, छःरि पालित संघ, ओली आराधना के साथ ही अनेक श्रीसंघों में संगठन स्थापित करते हुए अनेकों प्रेरणादायी कार्य गुरुभ्राता मुनिराजश्री अशोकविजयजी म. सा. एवं प्रथम शिष्य मुनिराजश्री आनन्दविजयजी के साथ निष्पादित कर कीर्तिमानों की लम्बी सूचि बनाई है। वर्तमान में मुनिश्री अमृतरत्नविजयजी व मुनिश्री जिनरत्नविजयजी म. सा. आदि तीन शिष्य विद्यमान हैं।

आपश्री योगिराजश्री के मेधावी, लाड़ले शिष्य तो थे ही परन्तु योगिराजश्री के गुरुभ्राता राष्ट्रसन्त, साहित्य-मनीषी आचार्यदेव श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के परम वफादार और विश्वासपात्र मुनियों में से एक थे। श्री जयन्तबावजी इनकी प्रतिभा से अत्यन्त प्रभावित और प्रसन्न थे तभी श्री माण्डवपुर तीर्थ में राष्ट्रसन्तश्री ने आचार्यपदवी समारोह के दिशानिर्देशन का कार्य सौंपा और मुनिश्री ने गुरुआदेशानुसार उस समारोह में अपनी प्रतिभा का उपयोग करते हुए बखूबी कुशलता से सम्पादित किया।

आपकी बहुमुखी प्रतिभा एवं कुशल योग्यता से प्रभावित होकर पुण्य-सम्राट गुरुदेव श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के आदेशानुसार कालधर्म के पश्चात् श्री त्रिस्तुतिक जैन संघ ने पुण्य स्थली श्री माण्डवपुर तीर्थ में विक्रम सम्वत् 2074, वैशाख कृष्णा अष्टमी, बुधवार, दिनांक 19-4-2017 को अनेक श्रीसंघों एवं हजारों गुरुभक्तों की उपस्थिति में पट्टधरद्वय के रूप में श्री नित्यसेनसूरीश्वरजी एवं श्री जयरत्नसूरीश्वरजी को आचार्य पदवी से अलंकृत किया और आपश्री ने अपने प्रभाव का उपयोग करते हुए उसी समय आचार्यश्री नित्यसेनसूरिजी म. सा. को गच्छाधिपति घोषित किया। आपने भी आचार्य पदवी की गरिमा और गौरव के अनुरूप अल्प समय में ही अपनी प्रतिभा और योग्यता से गच्छाधिपति के साथ वर्तमान में उग्र विहार करके मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, सौराष्ट्र आदि प्रान्तों की स्पर्शना करते हुए अनेक शासन प्रभावना के उत्कृष्ट कार्य सम्पादित करते हुए समाज को एकसूत्र में पिरोने का भगीरथ प्रयास किया वह वास्तव में अनुमोदनीय एवं प्रशंसनीय है।

समता, सरलता एवं तप-त्याग की विरल विभूति, आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. के सम्पूर्ण विराट व्यक्तित्व और कृतृत्व को शब्दों में बान्धना सूर्य को दीपक दिखाने अथवा सागर को गागर में भरने के समान है। आपके 45 वें दीक्षा दिवस पर आपश्री के श्रीचरणों में वन्दना करते हुए आपके दीर्घायु एवं उज्ज्वल अनागत की कामना करते हैं। आप जीवन भर इसी प्रकार जिनशासन की धर्मध्वजा को फहराते हुए गुरुगच्छ कीर्ति की सुवास चिहुँओर महकाते रहें।

-प्रियदर्शी

भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेशश्री द्वारा आचार्यपदवी के पश्चात् दो वर्षों में निरूपित

कीर्तिमान स्तम्भ

- दादागुरुदेवश्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. की पट्ट-परम्परा में निर्विरोध अविलम्ब आचार्य हुए।
- अपने प्रभाव का उपयोग करते हुए संघहित में गच्छाधिपति की घोषणा। जिससे सकल श्रीसंघों ने अनुमोदना करते हुए प्रशंसा की।
- आचार्य पदारोहण के पश्चात् मालवा प्रदेश में गच्छाधिपतिश्री नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. के साथ भव्य मंगल प्रवेश एवं समन्वयवादी रहते हुए सम्पूर्ण मालवा में धर्म जागृति के साथ मतभेद मिटाते हुए पुण्य-सम्राट गुरुदेवश्री के गौरव में श्रीवृद्धि की।
- तीव्र समय में सूरिमन्त्र की पाँचों पीठिका की आराधना।
- लम्बे विहार कर इतिहास के सुनहरे पन्नों पर स्वर्णिम अक्षरों से अंकन।
- तीव्र समय में सूरिमन्त्र की पाँचों पीठिका की आराधना।
- लम्बे विहार कर इतिहास के सुनहरे पन्नों पर स्वर्णिम अक्षरों से अंकन।
- अल्प समय में 12 से 14 प्रतिष्ठाएँ सम्पन्न कर कीर्तिमान स्थापित किया है।
- पुण्य-सम्राट गुरुदेवश्री की धरोहरों एवं जितने संघ हैं, उन स्थानों की स्पर्शना।
- त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के पदस्थ आचार्यों से आत्मीय सम्बन्ध होने से परस्पर सौहार्दपूर्वक मिलन एवं चर्चा।
- समन्वयवादी नीति से प्रथम बार सियाणा प्रतिष्ठोत्सव में त्रिस्तुतिक संघ के पदस्थ आचार्यों का आपके सद्प्रयासों से पदार्पण।

वन्दनकर्ता

श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय राजेन्द्रसूरि स्मारक जैन संघ, उदयपुर-काया

श्री राजेन्द्रसूरि सेवा संस्थान, उदयपुर

दूरभाष - 0294-2811693, 9001295006-8

मुनि अशोक की भावना, हुई आज साकार ।
निर्मल हृदय चालीसा, जपें सभी नरनार ।।
शान्तिविजय गुरुदेव की, महिमा असीम जान ।
माण्डवपुर शुभ भूमि से, किया मोक्ष प्रस्थान ।।

श्री शान्ति गुरु चालीसा

जय-जय-जयति शान्ति गुरुराया ।
दर्शन लगता है सुखदाया ।।1
ग्राम धन्य पीथापुर प्यारा ।
जहाँ लिया गुरु ने अवतारा ।।2
उन्नीस सौ छियोतर आया ।
प्रकटा सूरज तिमिर हटाया ।।3
श्री भगवान पिता हैं प्यारे ।
मात ज्योति के नयन सितारे ।।4
चामुण्डा का आशिष पाया ।
हुई दया तो देवा आया ।।5
बरसों बाद खुशी घर छाई ।
आया देने गाँव बधाई ।।6
बाल क्रीड़ा सबको भाई ।
दस की उम्र निकट है आई ।।7
उठा पिता का सर से साया ।
देवा ने घर भार उठाया ।।8
जगमाल चचा घर पर लाये ।
सद्गुरु गङ्गाराम सुहाए ।।9
जाते पशु धन नित्य चराने ।
दिन में गुरुजी लगे पढ़ाने ।।10
काका ने जब इसको जाना ।
बन्द किया तब पशु चरवाना ।।11
काम खेत पर दिन भर करते ।
निशि में सन्त समागम करते ।।12
सोलह की वय की जब पारा ।
मातु ज्योति का गया सहारा ।।13
सातों बहिनें हुई पराई ।
तब काका से मिली विदाई ।।14
एक शेर को दूर भगाया ।
पशुधन अपना स्वयं बचाया ।।15
मातु भगवती सपने आई ।
संयम ने तब ली अँगड़ाई ।।16
शान्तिसूरि चरणों में आये ।
उनकी सेवा कर हरसाये ।।17
ज्ञानार्जन की राह दिखाई ।
हरिद्वार जा शिक्षा पाई ।।18
लौटे शान्ति गुरु की शरण में ।
भाव लिए संयम के मन में ।।19
आज्ञा शान्तिसूरि की पाई ।
यतीन्द्र चरणन दौड़ लगाई ।।20
गुरु को मन के भाव बताये ।
गुरु बोले- 'आज्ञा ले आयें' ।।21
देवा कहे- 'नहीं है मेरा' ।
तेरा - मेरा छोड़ा घेरा ।।22
गुरु ने की जब योग्य समीक्षा ।
हरजी नगरी दे दी दीक्षा ।।23
शान्ति गुरु ने मार्ग बताया ।
इससे यतीन्द्र शान्ति बनाया ।।24
तप-जप की अनुपम उमंग में ।
विचरे वे गुरुराज संग में ।।25
जब सम्मेद शिखर गुण जाना ।
तब यह निश्चय मन में ठाना ।।26
'अन्न ग्रहण तब तक न करूँगा ।
जब तक इस भू पग न धरूँगा' ।।27
शान्ति जयन्त बागरा आये ।
योग्य शिष्य जयरत्न बनाये ।।28
लीन योग-जप-तप में रहते ।
ज्ञान-साधना पूरी करते ।।29
बागोड़ा-पादरु गुरु आये ।
बरसों के मतभेद मिटाये ।।30
अनुपम अद्भुत काम कराये ।
जिनशासन का नाम दीपाये ।।31
विचरण कर मेंगलवा आये ।
अशोक-आनन्द शिष्य पाये ।।32
माण्डवपुर मन को अति भाया ।
तीर्थ विकास बहुत करवाया ।।33
जब आचार्य पदोत्सव आया ।
जयन्तसेन सूरि पद पाया ।।34
मान सूरिजी से जब पाया ।
संयमवयः स्थवीर कहलाया ।।35
दर्शन को नर-नारी आते ।
वचनसिद्ध अनुकम्पा पाते ।।36
पारदर्शी राजेन्द्र पुजारी ।
जप-तप से सींची फुलवारी ।।37
कृपासिन्धु की करुणा बरसे ।
पाकर जन-जन का मन हरषे ।।38
जयरत्नसूरि शिष्य दुलारा ।
सुगुरु नाम जग में विस्तारा ।।39
गुरु गुण चालीसा जो गाये ।
'प्रियदर्शी' सुख-साधन पाये ।।40

।। दोहा ।।

'प्रियदर्शी' शुभ चित्त से, जपलें गुरु का जाप ।
दर्शन करने से मिटें, सबके ही सन्ताप ।।

शुभाशीष-
प. पू. सूरिमन्त्राराधक, माण्डवपुर तीर्थोद्धारक, आचार्यदेवेश
श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा.
प्रेरणा- मुनिराजश्री अशोकविजयजी म. सा.

लोकार्पण
दिनांक 24-12-2017
काया-उदयपुर

प्रणेता-
कुलदीप डाँगी 'प्रियदर्शी'
राष्ट्रीय कवि एवं गीतकार, उदयपुर

सन्दर्भ कर्ता
श्री गौड़ी पार्श्वनाथ-राजेन्द्रसूरि मातुश्री धाम चेरिटेबल ट्रस्ट, आकोली
दूरभाष - 7742666680, 9844142220

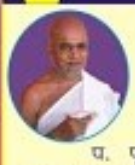

गच्छाधिपतिश्री का विहार म.प्र. से मरुधर के द्वार

प. पू. युग प्रभावक, पुण्य-सम्राट, राष्ट्रसन्त श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के वर्तमान पट्टधर गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. आदि श्रमण-श्रमणिवृन्द ने तालनपुर तीर्थ में प्रभु प्रतिष्ठांजनशलाका के पश्चात् मध्यप्रदेश से मरुधर प्रदेश की ओर विहार प्रारम्भ किया।

गच्छाधिपतिश्री नन्दूरी तीर्थ, लक्ष्मणी तीर्थ, अलिराजपुर, खट्टाली, जोबट, आम्बुआ, भाबरा, दाहोद (श्री सीमन्धरस्वामीजी), संजेली आदि की स्पर्शना कर धर्म जागृति करते हुए राजस्थान प्रदेश में प्रवेश करेंगे। गच्छाधिपतिश्री का विहारक्रम में आने वाले सभी नगरों में बैण्ड-बाजों और ढोल के साथ विशाल संख्या में आये गुरुभक्तों ने अगवानी करते हुए नगर प्रवेश कराते समय मार्ग में अनेक गुरुभक्तों ने गहुँली कर बधाते हुए स्वागत किया। गच्छाधिपतिश्री और मुनिवृन्द ने सभी स्थानों पर धर्मदेशना प्रदान करते हुए सन्देश दिया कि देव-गुरु-धर्म के मार्ग पर चल कर मनुष्य अपना आत्मकल्याण कर सकता है।

गच्छाधिपतिश्री नित्यसेनसूरिजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में दिनांक 12-1-2019 को गुरुसप्तमी महापर्व दादागुरुदेव द्वारा उद्धरित श्री कोरटा तीर्थ में महोत्सवपूर्वक मनाया जायेगा। जिसकी सम्पूर्ण तैयारियाँ चल रही है।

गच्छाधिपतिश्री राजनगर आत्मोद्धार के चार मुमुक्षु को मुहूर्त प्रदान करेंगे

गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. आदि श्रमणि-श्रमणिवृन्द की निश्रा में होने वाले मुहूर्त प्रदान महोत्सव में जुड़े चार मुमुक्षुओं को दिनांक 16 जनवरी 2019 को शिवगंज (राज.) में मुहूर्त प्रदान किया जायेगा।

राजनगर-अहमदाबाद में होने वाले आत्मोद्धार में मुमुक्षु विशेषभाई व मुमुक्षु मिलनबेन की भाई-बहिन की जोड़ी के साथ अब चार और मुमुक्षु मुहूर्त प्राप्त करेंगे। उनकी ही छोटी बहिन 27 वर्षीय मुमुक्षु निरालीबेन हँसमुखभाई धरू, 25 वर्षीय मुमुक्षु सिल्की बहिन महेशभाई आम्बाणी, थराद आत्मोद्धार में दीक्षित पू. मुनिराजश्री निर्दोषरत्नविजयजी म. सा. की सांसारिक छोटी बहिन 20 वर्षीय मुमुक्षु निशीबेन दिनेशभाई दोशी एवं मायानगरी मुम्बई में रहकर भी संयम के पथ पर चलने के उन्नत भावों को रखने वाली 23 वर्षीय मुमुक्षु नियतीबेन नरेन्द्रभाई संघवी गच्छाधिपतिश्री के करकमलों से मुहूर्त ग्रहण करेंगे।

भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक का कर्णावती नगरी में स्वागत

प. पू. गच्छाधिपति, पुण्य-सम्राट, राष्ट्रसन्त संयम दानेश्वरी श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के पट्टधर भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक, शासन प्रभावक, प्रवचनकार, आचार्यदेव श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. एवं मुनिराजश्री अशोकविजयजी म. सा. का तालनपुर प्रतिष्ठांजनशलाका के पश्चात् मध्यप्रदेश के कुक्षी, बाग, टाण्डा, रिंगनोद, राजगढ़, श्री मोहनखेड़ा तीर्थ, झाबुआ, श्री देवझिरी तीर्थ आदि में विहार में आने वाले नगरों में भव्य मंगलमय प्रवेश हुआ। विहारानुक्रम में गुजरात प्रान्त में आचार्यदेवश्री के

पदार्पण पर आणन्द, नड़ियाद, अहमदाबाद आगमन पर भव्य मंगल प्रवेश के साथ अनेक उपनगरों में स्वागत करते हुए बधाया। आचार्यदेवेशश्री का अहमदाबाद नगर में अवनीश सोसायटी, अमराईवाड़ी, ओढ़व, शाहीबाग, तुलसी विहार, खानपुर, शंखेश्वर देरासर घी काँटे से रतनपोल हाथीखाना गुरुमन्दिर, वाघेश्वरी पोल से मीठाखली आदि में स्थान-स्थान पर गहुँली करते हुए विशाल संख्या में गुरुभक्तों के साथ भव्य प्रवेश हुआ।

सभी स्थानों पर प्रवेश के पश्चात् प्रवचन रखा गया। अपने प्रवचनों में आचार्यदेवेशश्री ने धर्म मार्ग पर चलने का संकेत दिया और कहा कि मनुष्य देव-गुरु के बताये मार्ग का अनुसरण करता है उसका यह भव और परभव दोनों ही कल्याणकारी बनता है। धर्म मार्ग पर चलने पर थोड़े कष्टों को जरूर सहना पड़ता है परन्तु गुलाब काँटों के बीच ही खिलता है।

आचार्यदेवेशश्री यहाँ से विहार कर श्री भाण्डवपुर तीर्थ में दादा गुरुदेवश्री की जन्म एवं पुण्यतिथि गुरुसप्तमी महापर्व एवं आपकी दीक्षा के 45 वें वर्ष में प्रवेश पर आयोजित भव्य कार्यक्रमों में अपनी निश्रा प्रदान करेंगे।

यतीन्द्र वाणी में प्रकाशनार्थ सामग्री निम्न नम्बर व ई-मेल पर भिजावें
कुलदीप 'प्रियदर्शी' 09413763991
e-mail : priyadarshikuldeep@gmail.com

वन्दनकर्ता
श्री सुमतिनाथ-राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मन्दिर ट्रस्ट, रामेश्वरम् (तमिलनाडु)

अतिप्राचीन श्री भाण्डवपुर तीर्थ का आकाशीय परिदृश्य

निर्माणाधीन जिनमन्दिर

अतिप्राचीन श्री भाण्डवपुर महातीर्थ

प. पू. विश्वपूज्य, दादा गुरुदेव **श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा.** की
192 वीं जन्म एवं 112 वीं पुण्यतिथि गुरुसप्तमी पर्व सह
भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक, आचार्यदेवेश **श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा.** के
45 वें दीक्षा दिवस अनुमोदनार्थ

❊ दिव्यकृपा ❊
प. पू. पुण्य-सम्राट, राष्ट्रसन्त
श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.
प. पू. संयमवयः स्थविर, कृपासिन्धु गुरुदेव
श्री शान्तिविजयजी म. सा.

सकल श्रीसंघ आमन्त्रण

❊ आशीर्वाद ❊
प. पू. गच्छाधिपति
श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

गुरु सप्तमी पर्व
पौष शुक्ला 7, 13-1-2019

45 वाँ दीक्षा दिवस
पौष शुक्ला 6, 12-1-2019

पूज्य आचार्यप्रवरश्री जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. के
45 वें संयम-पर्याय निमित्त गुरुगुणगान सभा प्रातः 10 से 12 बजे
संघ अग्रणी, उद्योगपति, जननेता, गुरुभक्तों द्वारा सम्बोधन
गाँव में जुड़ तथा स्कूल में बेग वितरण
लाभार्थी - श्रा. भँवरलाल मेघराजजी छत्रिवावोरा
मिलिबन ग्रुप, सुराणा जिला-जालोर (राज.)

गुरु सप्तमी पर्व दिनांक 13-1-2019
प्रातः 8.30 से 10 बजे - पूजा प्रक्षाल, अल्पाहार
प्रातः 10 बजे - गुणानुवाद सभा, वार्षिक चढ़ावे
दोपहर 12 बजे से - नवकारसी (सुरुचि भोजन)
दोपहर 2 से 4 बजे - श्री राजेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजा
सायं 6 बजे से - गुरुभक्ति तथा आरती

आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं

❊ शुभनिश्रा ❊

पुण्य-सम्राट राष्ट्रसन्त श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के पट्टधर,
भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक, आचार्यप्रवर **श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा.**
मुनिराजश्री अशोकविजयजी म. सा., मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म. सा.,
मुनिराजश्री जिनरत्नविजयजी म. सा. आदि मुनि भगवन्त एवं
विदुषी साध्वीजी **श्री सूरीकिरणाश्रीजी म. सा.**
साध्वीश्री अरुणप्रभाश्रीजी म. सा., साध्वीश्री सम्यक्प्रभाश्रीजी म. सा.,
साध्वीश्री शरद्प्रभाश्रीजी म. सा., साध्वीश्री शीतलप्रभाश्रीजी म. सा.,
साध्वीश्री विनीतप्रभाश्रीजी म. सा. आदि श्रमणिवृन्द

निवेदक-आमन्त्रक- **श्री महावीर जैन श्वेताम्बर पेढ़ी (ट्रस्ट)**
श्री वर्धमान-राजेन्द्र जैन भाग्योदय ट्रस्ट (संघ)
मु. पो.- भाण्डवपुर तीर्थ, जिला- जालोर (राज.)

सब मिल बोलो जय गुरुदेव !

मोहनखेड़ा में बैठे प्यारे गुरुराज ।
पल में बनाते हैं बिगड़े काज ।
दर्शन करके धन्य हुए नरनार ।
राजेन्द्रसूरि की करो जयकार ।
जय गुरुदेव बोलो जय गुरुदेव ।
सब मिल बोलो जय गुरुदेव ॥ स्थाई ॥

राजस्थान प्रान्त में भरतपुर ग्राम ।
केसर की कुक्षी जन्में रत्नराज नाम ।
बचपन में ही किए अद्भुत काम ।
गुरुजी की महिमा ललित ललाम ।
केसरिया जाते वाला तारे गुरुदेव ॥ 1 ॥

मूरतिया मन को मोहने वाली ।
महिमा गुरु की देखी सबसे निराली ।
आता जो भी द्वार पर बनके सवाली ।
भर देते झोली गुरु उसकी खाली ।
संकट में सबके सहारे गुरुदेव ॥ 2 ॥

अभिधान राजेन्द्र कोष को बनाया ।
अनुपम ज्ञान का खजाना लुटाया ।
सारा विश्व इसको देख चकराया ।
ज्ञानी-ध्यानी विश्वपूज्य हैं कहाया ।
सच्चे ज्ञान का ही दान देने वाले गुरुदेव ॥ 3 ॥

मन के विकारों को सभी बिसरायें ।
एकता के सूत्र में सभी बन्ध जायें ।
गुरु के गुण सब मिल कर गायें ।
राजेन्द्र नाम की अलख जगायें ।
गली-गली गूँजे द्वारे-द्वारे गुरुदेव ॥ 4 ॥

जन्म निर्वाण तिथि एक गुरु पाई ।
पौष सुदी सातम की शुभ घड़ी आई ।
भक्तों का सैलाब आता नगर-नगर से ।
गुरु आरती में केसरिया केसर ही बरसे ।
पावन बनी है माटी जहाँ प्यारे गुरुदेव ॥ 5 ॥

मोहनखेड़ा में गुरुदेव की समाधि ।
दर्शन से कट जाती आधि और व्याधि ।
श्रद्धा भाव लेकर गुरुभक्त आते ।
मन की मुराद पल भर में पाते ।
'प्रियदर्शी' भक्तों के दुलारे गुरुदेव ॥ 6 ॥

-कुलदीप 'प्रियदर्शी'
राष्ट्रीय कवि एवं गीतकार

दीक्षा दिवस मनाएँ

जयन्तसेनसूरीश्वर के सप्तम पट्टधर ।
यतीन्द्र-विद्या सेवा कर हर्षाए गुरुवर ।।
रम गए बचपन से शान्तिगुरु के चरणन ।
त्याग-तपस्या से तन बनाया कुन्दन ।।
नगर-नगर विचरे शासन के हितकारी ।
सूरीश्वर राजेन्द्र की महिमा है विस्तारी ।।
रीति-नीति स्पष्ट सोच रखते गहरी ।
श्वासोश्वास में शासन की सेवा ही भरी ।।
वर्धमान के तीरथ को भव्य रूप दिलाया ।
रमणीय शिल्पकला से सुन्दर इसे सजाया ।।
जीवन में प्रण धारा गुरुवर्यों के स्वप्न सजाना ।
कीर्ति-पताका गुरुगच्छ की चहुँदिशि फहराना ।।
जयरत्नसूरिजी चरणों में भाव से शीष झुकाएँ ।
यह 45 वाँ दीक्षा दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाएँ ।।

गुरुचरणोपासक-
कल्पना जैन, उदयपुर

वन्दनकर्ता

श्री सूरिराजेन्द्र-जयन्तसेन गुरुकुलम् संस्थान, बोरिआवी (आणन्द)

मुनिराजश्री की निश्रा में गुरुमन्दिर की जाजम

उदयपुर (स. सं.),

माण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवश्री जयरत्नसरीश्वरजी म. सा. के शिष्यरत्न कार्यदक्ष मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म. एवं मुनिराजश्री जिनरत्नविजयजी म. सा. का दिनांक 12-12-2018 को अमरसर (सरत) नगर में आगामी 15 फरवरी 2019 को होने वाली श्री राजेन्द्रसूरि गुरुमन्दिर प्रतिष्ठा महोत्सव की जाजम हेतु भव्य मंगल प्रवेश हुआ। दिनांक 13 दिसम्बर 2018 को मुनिराजश्री की निश्रा में श्री वासुपूज्य जिनमन्दिर में नूतन निर्मित छत्रियों में विराजमान होने वाले प्रभुजी के चढ़ावे एवं पंचाह्निका प्रतिष्ठा महोत्सव के चढ़ावे हर्षोल्लास एवं उत्साह से लाभ लेते सम्पन्न हुए।

यह प्रतिष्ठा श्री वासुपूज्य जैन श्वेताम्बर पेढ़ी (संघ) के तत्वावधान में सम्पन्न होगी। जाजम के लाभार्थी शा. जावन्तराजजी वाणीगोता परिवार के घर बाजते-गाजते सकल श्रीसंघ के साथ ले जाई गई और पुनः दूसरे दिन शुभमुहूर्त में लोकर कल्याण आराधना भवन धर्मशाला में जाजम हर्षातिरेक वातावरण में सम्पन्न हुई।

इस मंगल प्रसंग पर विदुषी साध्वीश्री सूर्यकिरणाश्रीजी म. सा. की सुशिष्या साध्वीश्री अरुणप्रभाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा भी विराजमान रहे।

प्रथम बार गुरुदेव के जाप एवं भक्ति का विशिष्ट आयोजन

उदयपुर (स. सं.),

लवाणा मण्डन श्री आदिनाथ दादा की असीम अनुकम्पा एवं विश्वपूज्य दादागुरुदेव प्रातःस्मरणीय श्री मद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. की दिव्यकृपा एवं लवाणा नगर के परम उपकारी शान्तमूर्ति श्री हर्षविजयजी म. सा. के शुभाशीष एवं पुण्य-सम्राट श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के आशीर्वाद से लवाणा नगर वाले के नाम से प्रसिद्ध और जिनके लवाणावासियों पर अनन्त उपकार की अमीवर्षा की ऐसे शान्तमूर्ति, तपस्वी योगिराज, संयमवयः स्थविर श्री शान्तिविजयजी म. सा. की भक्ति प्रत्येक माह की शुक्ल पक्ष की 11 को सूरत नगर में रखी जायेगी।

श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ लवाणा एवं अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् लवाणा (टीम सूरत) द्वारा प्रथम बार मगसर शुक्ला-11 दिनांक 19-12-2018 को भगवान और गुरुदेव के जाप और भक्ति का एक विशिष्ट आयोजन आई-105, शिव रेजिडेन्सी शंकर नगर सोसायटी, पालनपुर पाटिया, सूरत में किया गया। जिसकी प्रथम भक्ति का लाभ मोरखिया चीनूभाई मफतलाल भाई परिवार ने लिया। इस प्रथम आयोजन में गुरुभक्तों ने उत्साह से भाग लिया।

एकादशाह्निका स्मृति महोत्सव

उदयपुर (स. सं.),

पुण्य-सम्राट गुरुदेवश्री के पट्टधरद्वय की आज्ञानुवर्तिनी साध्वीश्री भाग्यकलाश्रीजी म. सा., साध्वीश्री युगप्रियाश्रीजी म. सा. एवं साध्वीश्री यशप्रियाश्रीजी म. सा. का भाटपचलाना नगर में ऐतिहासिक चातुर्मास उपरान्त दिनांक 23-12-2018 को नीमवाला उपाश्रय, रतलाम नगर में भव्य प्रवेश हुआ। साध्वीवृन्द यहाँ स्व. श्रीमती निर्मलाजी धर्मपत्नी डॉ. ओ. सी. जैन द्वारा आयोजित एकादशाह्निका स्मृति महोत्सव में अपनी निश्रा प्रदान करेंगी। नीमवाला उपाश्रय पर प्रतिदिन दोपहर को विधिकारक चन्द्रवीर मण्डल एवं संगीतकार प्रवीण बरबोटा तथा प्रदीप डॉगी द्वारा प्रतिदिन विविध पूजाएँ पढ़ाई जायेगी। महोत्सव के अन्तर्गत दिनांक 31-12-2018 को त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ का स्वामीवात्सल्य रखा गया।

संभागीय आयुक्त का माण्डवपुर तीर्थ में दर्शनार्थ आगमन

उदयपुर (स. सं.),

अतिप्राचीन श्री माण्डवपुर महातीर्थ में जोधपुर सम्भागीय आयुक्त श्री ललितकुमारजी गुप्ता दर्शनार्थ पहुँचे। तीर्थाधिपति भगवान श्री महावीरस्वामीजी, श्री राजेन्द्रसूरिजी, पुण्य-सम्राट गुरुदेवश्री एवं श्री शान्तिविजयजी समाधि के दर्शन किए।

आयुक्त महोदय श्री गुप्ता ने यहाँ पर विराजित कार्यदक्ष मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म. सा. से आशीर्वाद प्राप्त किया और चर्चा करते हुए इस महातीर्थ की प्राचीनता एवं प्राथमिकता की जानकारी भी ली। मुनिराजश्री से चर्चा के दौरान तीर्थ के विकास कार्यों में पूर्ण प्रशासनिक सहयोग प्रदान करने की बात भी कही।

आपने क्षेत्रीय पानी-सड़क एवं बिजली की समस्याओं को भी सुना और शीघ्र सुचारू व्यवस्था प्रदान करने का आश्वासन दिया। तीर्थ पेढ़ी की ओर से आयुक्त महोदय का साफा, माला एवं श्रीफल से बहुमान किया गया।

साध्वीश्री का नागदा में प्रवेश

उदयपुर (स. सं.),

पुण्य-सम्राट गुरुदेवश्री के पट्टधरद्वय की आज्ञानुवर्तिनी साध्वीश्री अमितदृष्टाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा-7 का इन्दौर चातुर्मास के पश्चात् श्री नागेश्वर तीर्थ की ओर विहार करते हुए दिनांक 23 दिसम्बर 2018 को श्री शान्तिनाथ जिनालय व श्री जयन्तसेन आराधना भवन, जैन कॉलोनी नागदा जं. में पदार्पण हुआ। इस अवसर पर अनेक गणमान्य एवं गुरुभक्त उपस्थित थे। यहाँ से विहार कर साध्वीवृन्द रूपेटा होते हुए दिनांक 25 दिसम्बर 2018 को महिदपुर रोड़ पहुँचेंगे।

रानीखेड़ा में पौष दशमी महोत्सव

उदयपुर (स. सं.),

पुण्य-सम्राटश्री के पट्टधरद्वय की आज्ञानुवर्तिनी एवं साध्वीश्री महाप्रभाश्रीजी म. सा. की शिष्या साध्वीश्री पुण्यदर्शनाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा-3 की निश्रा में निम्बाहेड़ा के समीप रानीखेड़ा तीर्थ की भूमि पर श्री पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक एवं दीक्षाकल्याणक पर अट्ठमतप की आराधना एवं पंचाह्निका महोत्सव श्री पार्श्वनाथ श्वेताम्बर पुण्यार्थ एवं शैक्षणिक न्यास, रानीखेड़ा-निम्बाहेड़ा (राज.) द्वारा आयोजित किया गया।

महोत्सव का प्रारम्भ 29-12-2018 को समस्त संघों के साथ निम्बाहेड़ा से मंगल प्रवेश किया गया। 30-12-2018 को दोपहर 108 पार्श्वनाथ महापूजन पढ़ाई गई। 31-12-2018 को परमात्मा का भव्य वरघोड़ा निकाला गया। जिसमें निकटवर्ती क्षेत्रों से एवं अन्य नगरों से समाजजन पधारे। वरघोड़े के पश्चात् सकल जैन समाज का स्वामीवात्सल्य किया गया। दोपहर में श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजन संगीत की स्वरलहरियों के साथ पढ़ाई गई। सांय 108 दीपकों से प्रभु की भव्य आरती की गई तथा नयनाभिराम अंगरचना की गई। 1-1-2019 को दोपहर श्री राजेन्द्रसूरि गुरुपद महापूजन पढ़ाई गई। 2-1-2019 को प्रातः अट्ठम तप के तपस्वियों के सामूहिक पारणे कराये गये तथा सभी तपस्वियों का बहुमान करते हुए प्रभावना वितरीत की गई। महोत्सव में नित्य साध्वीश्री के प्रातः प्रवचन हुए। 31-12-2018 को अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् द्वारा स्वेच्छिक रक्तदान शिविर एवं जैन श्वे. सोश्यल ग्रुप द्वारा निःशुल्क दन्त चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया।

वन्दन कर्ता
श्री धानसा जैन संघ स्थापित-श्री यतीन्द्र वाणी प्रकाशन, मोटेरा
दूरभाष - 079-23296124

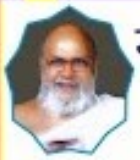

जयन्त-शान्ति एक काम किए अनेक

परम पूज्य पुण्य-सम्राट, राष्ट्रसन्त, आचार्यदेव श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. एवं संयमवयः स्थविर, योगिराजश्री शान्तिविजयजी म. सा. ने एकजुट होकर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के हित में जितने भी निर्णय लिये एवं गच्छकीर्ति में श्रीवृद्धि करने हेतु अनेक जिनशासन प्रभावना के सुकार्यों को सम्पादित किया वह अनुकरणीय एवं अनुमोदनी होने के साथ ही इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर अंकित है।

इक दूजे के प्रति त्याग, प्रेम एवं सामंजस्य इतना प्रगाढ़ था कि देखने वाला अचम्भित हो जाता था कि जैनशासन में ऐसी विरल विभूतियाँ भी है जिनके चिन्तन में मात्र शासन सेवा और जनकल्याण की भावना सदैव समाहित रहती है। दोनों ही निस्पृही और पदलोलुपता से कोसों दूर। तभी आज सभी के हृदय एवं मानस पटल पर 'श्री जयन्त बावजी एवं श्री शान्ति बावजी नाम अंकित है।

दोनों गुरुभ्राताओं ने जो पुण्याई अर्जित की है वह भूतो न भविष्यति कोई अन्य अर्जित कर सकता है। भले ही कुछ नासमझों ने इन दोनों महान विभूतियों के मध्य विघटन की दरार डालने का प्रयास किया परन्तु विवेकशील महात्माओं ने स्वविवेक से चिन्तन करते हुए उन सभी को दिखा दिया कि-

नादानों ने नहीं समझी, सद्गुरुओं की प्रीत।
जयन्त-शान्ति सदा रहे, इक-दूजे के मीत ॥

आचार्य पदवी प्राप्त करने के पश्चात् भी पुण्य-सम्राट ने अपने गुरुभ्राता से वैसी ही प्रीति रखी जैसे पूर्व में थी। जब भी दोनों मिलते थे तो बड़े ही आत्मीय भावों के साथ तथा परस्पर दोनों को समाज एवं जिनशासन सेवा की चाहना और इसी शृंखला में शासन सेवा के जो कीर्तिमान स्थापित किए वह हम गिन नहीं सकते।

दोनों गुरुओं की छवि का दिग्दर्शन वर्तमान में श्री नित्यसेनसूरिजी म. सा. एवं श्री जयरत्नसूरिजी म. सा. में परिलक्षित होती दिख रही है। पट्टधरद्वय वर्तमान में कन्धे से कन्धा मिलाकर एक साथ अपने गुरु के स्वप्नों को साकार करने में जो अथक परिश्रम कर रहे हैं वह अनुमोदनीय है और प्रशंसनीय भी है।

हम सभी को भी गुरुगच्छ मर्यादा का स्मरण करते हुए पट्टधरद्वय के प्रत्येक आदेश को शिरोधार्य करते हुए गुरुभ्राताओं के स्वप्नों को मूर्तरूप देने के लिए सदा तत्पर रहना है, तभी हमारी पुण्य-सम्राट गुरुदेवश्री एवं योगिराज गुरुदेवश्री के प्रति समर्पणता सिद्ध होगी। संघ एवं परिषद् त्रिस्तुतिक समाज के अभिन्न अंग है और इनके पदों पर समाज के मेधावी और हित चिन्तक परम गुरुभक्त आसीन है उनका भी पूर्ण दायित्व है कि समाज में किसी बात से मतभेद हो तो उसका उचित समाधान करते हुए मतभेदों को दूर करने का प्रयास करें। क्योंकि कहा है कि मनभेद भले ही हो परन्तु मतभेद नहीं होना चाहिये, वाद भले ही हो परन्तु विवाद नहीं होना चाहिये।

आओ हम सब संकल्प करें कि दोनों गुरुओं के सम्मान को चहुँदिशि में प्रसारित करने में हम अपनी सारी ऊर्जा लगाकर प्रसारित करेंगे और गुरुगच्छ के प्रति पूर्ण आस्थावान होकर वर्तमान के पट्टधरद्वय के प्रति विश्वासपात्र बनकर गुरुभक्ति को सार्थक करेंगे।

॥ श्री महावीराय नमः ॥

॥ जय जयन्तसेन ॥ नर सेवा : नारायण सेवा ॥ जय शान्ति गुरुदेव ॥

प. पू. भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक, आचार्यदेवेश,
श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा.
के 45 वें दीक्षा दिवस पर के उपलक्ष्य में
श्री आदिनाथ फतेह ग्लोबल आई हॉस्पीटल, जालोर एवं
राष्ट्रीय अंधता निवारण समिति जालोर के तत्वावधान में

विशाल निःशुल्क नैत्र चिकित्सा एवं
लैंस प्रत्यारोपण शिविर

※ शुभदिन ※
दिनांक 11-1-2019
समय : प्रातः 9 बजे से दोपहर 3 बजे
स्थान : डामराणी फार्म हाऊस
मेंगलवा-भाण्डवपुर रोड़

※ आयोजक ※
श्रीमती गीतादेवी w/o.कान्तिलालजी डामराणी-मेंगलवा
आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

※ अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें ※
रूपचन्द डामराणी 9810803842, 9928474358,
उत्तम डामराणी 9393707000, राजेन्द्र - ए 9390001005,
धीरज - बी 9310027060, धुलाराम परिहार 9772409828

शिविर प्रभारी : जगत प्रतापसिंहजी 9414074010

मोतिया बिन्द पकने का इन्तजार न करें,
यह घातक भी सिद्ध हो सकता है।

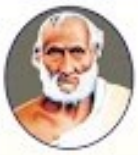

श्री यतीन्द्रवाणी प्रकाशन
संस्थापक : श्री जैन संघ-धानसा

विश्वपूज्य, अभिधान राजेन्द्र कोष प्रणेता दादा गुरुदेव
श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा.
की 192 वीं जन्म एवं 112 वीं स्वर्गारोहण तिथि गुरुसप्तमी महापर्व एवं
भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक, आचार्यदेवेश
श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. के
45 वें दीक्षा दिवस पर
यतीन्द्र वाणी परिवार
की गुरु चरणों में भावसहित वन्दना !

प्रेषक :
यतीन्द्र वाणी (हिन्दी पाक्षिक)
C/o. श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार
विसामो बंग्लोज के पास,
विसत-गांधीनगर हाइवे,
मोटेरा, चान्दखेड़ा, साबरमती,
अहमदाबाद-382 424 (गुजरात)
दूरध्वनि : 079-23296124,
मो. 09426285604
e-mail : yatindravani222@gmail.com
www.shrirajendrashantivihar.com

'Reg. Under Postal Registration No. AHD-C/22/2018-2020 VALID UPTO 31st December-2020 issued by the SSPO's Ahmedabad City Division, permitted to post at Ahmedabad PSO on 1st & 15th every month'
RNI No. GUJ/HIN/1999/321
Licensed to Post Without Prepayment No. PMG/HQ/070/2018-20 valid up to 31/12/2020

श्री.....

.....

.....

स्वत्वाधिकार प्रकाशक, मुद्रक- शान्तिदूत जैनोदय ट्रस्ट, सम्पादक- चंकज बी. बालड, यतीन्द्र वाणी हिन्दी पाक्षिक, श्री राजेन्द्र शान्ति विहार, पो.- मोटेरा-382 424 से प्रकाशित एवं सनसाईन फोटो प्रिन्ट, एफ-4, तुषार सेन्टर, नवरंगपुरा, अहमदाबाद में मुद्रित